Subject :- Sociology Date :- 09/07/2020
Class :- 12th
Topic :- क्षेत्रवाद तथा इसके कारक
By :- Dr. Shyamanand Chaudhary
Guest Teacher Marwari College, D.B.G.
Online Study Material No :- 107

क्षेत्रवाद

क्षेत्रवाद की अवधारणा का वर्णन दो दृष्टीकोणों से की जा सकती है।
(1) विस्तृत या सैद्धांतिक दृष्टीकोण, और
(2) व्यवहारीक दृष्टीकोण।

विस्तृत या सैद्धांतिक रूप में क्षेत्रवाद एक विशिष्ट क्षेत्र मे रहने वाले लोगों कि अपनी क्षेत्र से अधिक लगाव व महसूस करने और अपने को अन्य समुहों से पृथक समझने कि भावना है। क्षेत्रवाद का तात्पर्य एक विशेष क्षेत्र मे रहने वाले व्यक्तियों कि उस भावना से है, जिसके अन्तर्गत वे अपनी एक विशेष भाषा, समान्य संस्कृति इतिहास और व्यवहार प्रतिमानों के आधार पर उस क्षेत्र से विशेष अपनत्व महसूस करते है तथा क्षेत्रिय आधार पर स्वयं को एक पृथक समुह के रूप मे देखते है। आज क्षेत्रवाद की धारणा एक आदर्श कल्पना है अपने व्यवहारीक रूप से क्षेत्रवाद एक गंभीर समाजिक और राजनैतिक समस्या बन चुका है। जो राष्ट्रीयता के विकास में सहायक न होकर उसके विकास मे गंभीर बाधायें उत्पन्न कर रहा है।

व्यवहारीक रूप से क्षेत्रवाद एक ऐसी संकीर्ण भावना या मनोवृत्ति का सूचक है जिसमें एक क्षेत्र विशेष का लोग राष्ट्रीय हीत कि तुलना में अपने क्षेत्रीय हीत को प्रधानता देते है और दुसरे क्षेत्र के विकास कि तुलना में अपने क्षेत्र के विकास पर अधिक बल देते है। दुसरे शब्दों मे यह कहा जा सकता है कि व्यवहारीक दृष्टीकोण से क्षेत्रवाद का तात्पर्य आज एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र के निवासियों कि उस संकीर्ण मनोवृत्ति से है, जिसके अन्तर्गत वे केवल एक क्षेत्र विशेष को अपना मानते है और राष्ट्रीय हीत की तुलना में अपने क्षेत्र विशेष के हीत को प्राथमिकता देते है। क्षेत्रवाद का यही रूप हमारी एक प्रमुख समस्या है। जिसने बंगाल बंगालीयों के लिये, आसाम आसामीयों के लिये, जैसे नारो मे वृद्धी करके राष्टीयता के विकास मे बाधा उत्पन्न करती है, क्षेत्रवाद कभी भाषा के आधार, कभी पिछड़ेपन को आधार बनाकर एक क्षेत्र विशेष के निवासी उग्र प्रदर्शन के द्वारा केन्द्र सरकार पर अधिक सुविधाऐं पाने के लिये दवाव डालते है। और सुविधायें प्राप्त न होने

Scanned with CamScanner

परअधिक सुविधाएँ पाने के लिये दबाव डालते हैं और सुविधाएँ प्राप्त न होने पर पृथक राज्य कि माँग करते हैं। इस प्रकार संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि एक क्षेत्र - विशेष के प्रति वहाँ के निवासियों की अंध भक्ति तथा पक्षता पूर्ण मनोवृत्ति ही क्षेत्रवाद है। यह एक ऐसी भावना है जिसमें राष्ट्रीय हित की अपेक्षा एक क्षेत्र विशेष के हीत को विशेष महत्व दिया जाता है।

क्षेत्रवाद के कारण :-

(1) राजनैतिक कारक :- अनेक स्थानीय नेता अपने एक क्षेत्र विशेष में अपना प्रभाव सिद्ध करने तथा दलगत स्वार्थों को पुरा करने के लिये वहाँ के निवासियों को में क्षेत्रीयता की भावना उत्पन्न करते हैं और गलत तर्कों के आधार पर अपने क्षेत्र के प्रति सरकार कि उदासीनता का दुष्प्रचार करते हैं। ऐसे नेता समय-समय पर आंदोलनों एवं उपद्रवों के द्वारा क्षेत्रवाद को भरकावा देते हैं। वे अपने क्षेत्र के लोगों में यह भावना उत्पन्न करते हैं कि पृथक राज्य के बिना उसके क्षेत्र का विकास संभव नहीं है।

२) आर्थिक कारक (Economic factor) :-

आर्थिक कारण से भी क्षेत्रवाद को बढ़ावा मिलता है। स्थानीय नेता एक क्षेत्र विशेष के लोगों में यह विश्वास उत्पन्न करने में यह सफल हो जाते हैं कि उनके आर्थिक पिछड़ेपन का एक कारण राज्य और केन्द्र सरकारें हैं और जब तक एक क्षेत्रीय सरकार की स्थापना नहीं होगी तब तक स्थानीय लोगों को न तो रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त होंगे और न ही उनका जीवन समृद्ध बन सकता है। झारखंडी नेता ने इसी तरह से बिहार से झारखंड को अलग कराने में सफलता प्राप्त की।

३) भाषायी कारक (Language factor) :-

भाषायी पृथकता भी क्षेत्रवाद को बढ़ावा देती है। आज उत्तर भारत के विरुद्ध दक्षिण भारत में जो क्षेत्रवाद पनपा है उसका मुख्य कारण भाषायी पृथकता है।

Dr. S. N. Choudhary
Marwari College
Darbhanga

Scanned with CamScanner